**CHAPTER 4, अपना मालवा - खाऊ उजाड़ू सभ्यता में**

**PAGE 47, प्रश्न - अभ्यास**

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:1**

**मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?**

**उत्तर:** जब मालवा में हर जगह बारिश होती है, तो मालवा के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालांकि चारो तरफ पानी - पानी हो जाने के कारण थोड़ी परेशानी जरूर होती है बारिश इतनी ज़्यदा होती है कि मालवा के सारे नदी - नाले लबालब भर जाते है और पानी घरो में तक घुस जाता है लेकिन फिर भी यहाँ बारिश के दिनों में उत्साह देखने को मिलता है क्योंकि जब बारिश होती है तो फसले लहलहा उठती है गांवों, के सभी तालाबों, कुओं में लबालब पानी भर जाता है जो आगे फसलो और वहां के इंसानो के लिए बहुत उपयोगी

होता है। मालवा के लोगो को लगता है कि भगवान बहुत प्रसन्न  हैं। वहां की बारिश मालवा को समृद्ध बनाती है

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:2**

**अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं?**

**उत्तर:** मालवा में अब अधिक बरसात ना होने के कई कारण है :

(क ) मालवा में बढ़ते औद्योगिकरण ने वहां के पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँचाया है।जिससे पर्यावरण में भयंकर बदलाव देखने को मिले हैं। ये भी एक प्रमुख कारण है।

(ख) हमारे वायुमंडल प्रदूषण के कारण कार्बन डाईऑक्साइड गैस की बढ़ोतरी हो रही है यह गर्म गैस होती है, जिसके कारण वायुमण्डल और हमारे धरती की ओजन परत को नुकसान पहुँच रहा है।

(ग)  बढ़ती जनसंख्या के कारण कंक्रीट के निर्माण में अधिकता आयी है हम लगातार जंगलो और पेड़ों की कटाई

कर रहे है जिसके कारण मानसून में परिवर्तन हो रहा है ये भी एक प्रमुख कारण है बारिश में कमी आने का।

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:3**

**हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी का प्रबंध जानते है और पहले ज़माने के लोग कुछ नहीं जानते थे?**

**उत्तर:** आज कल ये व्यापक स्तर पर सामाजिक मानसिकता हमारे चारो तरफ फैली हुई है की नयी पीढ़ी समझती है की पुरानी पीढ़ी को कुछ आता नहीं है। उसी प्रकार हमारे आज कल के  इंजीनियर अपने तकनीक ज्ञान को बहुत उच्च स्तर का मानते हैं। उनको लगता है कि आज ज्ञान पर विज्ञान का पूरा अधिकार है जल संग्रह और जल प्रदूषण को खत्म करने

के आधुनिक तरीके उन्हें मालूम है पहले के लोग बस प्रकृति पे निर्भर रहते थे आज रोज नयी तकनीक और नए अविष्कार हो रहे है पुराने ज़माने में लोगों को तकनीकी ज्ञान नहीं था। वे तकनीकी शिक्षा से अनजाने थे। ऐसा सोचकर वे स्वयं एक गलतफहमी में जीते हैं। आज कल के इंजीनियर मानते हैं कि पश्चिमी सभ्यता ने ज्ञान का प्रसार किया है। भारत के लोग तो अज्ञानी थे। रिनसां के बाद से ही लोगों के अंदर ज्ञान का फैलाव हुआ।

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:4**

**'मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज रिनेसा के बहुत पहले हो गए।' पानी के रखरखाव के लिए उन्होंने क्या प्रबंध किए?**

**उत्तर:** मालवा के राजा राजस्थान की प्राकृतिक समस्याओं और जरूरतों को बहुत करीब से जानते और समझते थे, राजा विक्रमादित्य, भोज और मुंज आदि राजाओं ने वहां के पठारों की कमजोरियों और ताकतों को पहचाना और वहां जनता के हित में कई आश्चर्यजनक कार्य किये । वे मालवा के भौगोलिक स्थिति को समझा और जल संग्रह के लिए बेहतर इंतजाम किए। उन्होंने तालाब, कुएं और बावड़ियों का निर्माण

किया। कि वे बारिश के पानी को संग्रहित करके रख सकें। इससे लोगो को पूरे साल पानी मिलता रहेगा और लोगों को पानी के लिए तरसना नहीं पड़ेगा । मालवा इसका सबसे बड़ा उदाहरण और प्रमाण दोनों है।

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:5**

**'हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही है।'- क्यों और कैसे?**

**उत्तर:** निःसंदेह आज का युग एक प्रगति युग है, लेकिन यह प्रगति हमारी सबसे बड़ी समस्या का कारण भी है, हम इस प्रगति के लिए प्रकृति को बहुत नुकसान पहुंचा रहे है। जैसे-जैसे प्रगति हो रही है, कई नुकसान भी सामने आ रहे हैं। "प्रदूषण" सबसे बड़ी और सबसे गंभीर समस्या है जो दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है।

जल, भूमि और आकाश सभी पूरी तरह से प्रदूषण के प्रभाव से प्रभावित हैं, मानव यह जानता है कि जल मनुष्य का जीवन है। इसके बावजूद मनुष्य ने इस अमूल्य जल संसाधन को भी प्रदूषित किया है। सदियों से जिन नदियों का पानी

जल का एक बड़ा और मुख्य स्रोत रहा है जो केवल मनुष्य के लिए ही नहीं बल्कि सभी प्राणियों के जीवन प्रणाली से जुड़ा है। लेकिन आजकल कारखानों का जहरीला पदार्थ और शहरों का गंदा पानी नदियों में बहा दिया जाता है। निरंतर प्रक्रिया ने नदियों के पानी को इतना प्रदूषित और विषाक्त बना दिया है कि यह न केवल पीने योग्य रही  है, बल्कि इससे भयानक बीमारियाँ भी होने लगी हैं, यहाँ तक कि इसमें रहने वाले जानवर भी विलुप्त होने के कगार पर हैं। सरकार और कई सामाजिक संगठन समय-समय पर इसे बचाने की कोशिश करते रहते हैं, लेकिन जब तक आम लोग सचेत नहीं होंगे, जब तक हर व्यक्ति पानी के मूल्य को समझना शुरू नहीं करेगा, तब वो दिन दूर नहीं जब ये नदियाँ नालो का रूप ले लेंगी। शहर के किनारे बहने वाली कई नदियों को हमने नाला बना दिया है और यमुना नदी इसका मुख्य उदाहरण है हमे जागरूक हो कर नदियों को नदी ही बने रहने देना होगा वरना हम दिन प्रति दिन जल की समस्या और बीमारियों के जाल में फसते जायेंगे।

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:6**

**लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है'? आप क्या मानते हैं?**

**उत्तर:** मै लेखक के इस कथन से बिल्कुल सहमत हूँ ऐसी औद्योगिक सभ्यता जिसने विकास के नाम पर प्रदूषण, प्रकृति का दोहन, धरती का विनाश किया हो उसे विकास कैसे कहा जाएगा। यह कैसा विकास है, जो हमें प्रगति के नाम पर विनाश की ओर ले जा रहा है। हम एक आविष्कार करते और उससे पांच नई समस्याएं और पैदा होती  हैं। यदि हम किसी भी विकास के साधनों को देखते हैं, तो हम विकास के स्थान पर विनाश देखते है । मनुष्य ने अपनी उत्पत्ति के बाद से पृथ्वी का शोषण शुरू कर दिया था। लेकिन तब शोषण की प्रक्रिया बहुत धीमी थी। जैसे-जैसे मनुष्य का विकास हुआ, उसने तीव्र गति से प्रकृति का दोहन शुरू कर दिया। उन्होंने रहने के लिए पेड़ों को काट दिया, आवास के लिए ईंटों का निर्माण करने के लिए मिट्टी का उपयोग किया, उन्होंने पृथ्वी को कोयले, सीमेंट, धातु, हीरे, आदि की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खोदा। यह कैसा विकास है, जिसमें स्वयं

की जड़ें कट रही हैं। इसलिए, हम इसे उजाड़ की अपसभ्यता ही कहेंगे।

**12:1:4:प्रश्न - अभ्यास:7**

**धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए।**

**उत्तर:** मनुष्यो द्वारा प्रकृति के साथ छेड़ - छाड़ से आज पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा रहा है। दुनिया भर के वैज्ञानिक इस भयावह स्थिति से परेशान हैं। इसके कारण पृथ्वी का वातावरण तेजी से गर्म होता जा रहा है। मनुष्यो ने अपनी सुविधाओं के नाम पर जो कुछ भी किया है, वह उनके लिए खतरनाक साबित हो रहा है। वाहनों, हवाई जहाज, बिजली संयंत्रों, उधोगों आदि से अंधाधुंध गैसीय उत्सर्जन के कारण वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ रही है और मीथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड आदि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि हो रही हैं, जिसके कारण इन गैसों का आवरण घनघोर होता जा रहा है। यह आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है, जिससे पृथ्वी का

तापमान बढ़ रहा है। बढ़ते तापमान की तुलना में ग्लेशियरों की बर्फ तेजी से पिघल रही है। जिसके कारण आने वाले समय में जल संकट उत्पन्न हो सकता है। वनों की कटाई की संख्या में बढ़ोतरी भी दूसरी  सबसे बड़ा कारण है। वन प्राकृतिक रूप से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को नियंत्रित करते हैं, लेकिन उनके प्राकृतिक नियंत्रकों को भी उनकी अंधाधुंध कटाई से नष्ट किया जा रहा है। इन गैसों के उत्सर्जन में अमेरिका और यूरोपीय देशों की प्रमुख भूमिका है। इनमें से अधिकांश गैसें वहां से निकल रही हैं।लेकिन वे इसे स्वीकार नहीं करते हैं।